International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157, Impact Factor: RJIF 5.22
www.multiresearchjournal.com
Volume 1; Issue 3; May 2016; Page No. 18-23

भारत में संचालित आई$_0$सी$_0$आई$_0$सी$_0$आई$_0$ और एस$_0$बी$_0$आई$_0$ बैंकों की लाभप्रदत्ता का विश्लेषण

[1] मनोज कुमार जाटव, [2] डॉ$_0$ परमानन्द बरौदिया

[1] शोधार्थी, माधव स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत
[2] सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग, प्रेस्टन कॉलेज, ग्वालियर (म.प्र.) भारत

सारांश
बैंकिंग एक अति प्राचीन व्यवसाय है। यद्यपि प्राचीन काल में वर्तमान जैसे बैंक नहीं थे, इस कारण विभिन्न देशों में बैंकिंग कार्य महाजन, सुनार एवं सर्राफ आदि के द्वारा ही किया जाता था। वर्तमान युग में बैंक वित्तीय सलाहकार, प्रतिनिधि तथा व्यवस्थापक का कार्य करते हैं, व्यापार तथा उद्योग के लिये यथोचित मात्रा में पूंजी की व्यवस्था करते है, समाज की बचतों को एक स्थान पर संग्रह कर उन्हें उपयोगी क्षेत्रों में विनियोजित करते हैं तथा देश की आर्थिक योजनाओं के लिये यथा समय धन की व्यवस्था कर देश की आर्थिक उन्नति में सक्रिय योगदान करते हैं। वर्तमान समय में प्रत्येक देश का उत्पादन, उद्योग एवं व्यापार आदि बैंकिंग व्यवस्था पर ही आश्रित होता है। आर्थिक एवं औद्योगिक विकास की योजनाओं की सफलता के लिए प्रत्येक देश बैंकिग के विकास की ओर पर्याप्त ध्यान देता है। प्रस्तुत शोध पत्र में आई.सी.आई.सी.आई. एवं एस.बी.आई बैंकों की लाभप्रदत्ता का विश्लेषण किया गया है। शोध पत्र में चयनित बैंकों में लाभप्रदत्ता विश्लेषण के अंतर्गत शुद्ध लाभ का पूंजी से अनुपात, शुद्ध लाभ का शुद्ध मूल्य पर अनुपात, शुद्ध लाभ का सकल संचालन आय से अनुपात, पूंजी कोषों पर प्रत्याय की दर एवं सकल लाभ अनुपात की गणना तथा उन्हें यथास्थान पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

शब्दकोष: बैंक, आई$_0$सी$_0$आई$_0$सी$_0$आई$_0$, एस$_0$बी$_0$आई$_0$, भारतीय अर्थव्यवस्था।

प्रस्तावना
आज बैकिंग व्यवस्था प्रत्येक देश की अर्थव्यवस्था की आधारशिला है। देश की अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास में निजी एवं सार्वजनिक बैंकों की लाभदायकता का महत्वपूर्ण योगदान है। बैंक का मुख्य उद्देश्य आर्थिक विकास की गति को तीव्र बनाना होता है। किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में बैंकिंग प्रणाली उस देश की विकास प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है तथा देश में आर्थिक स्थिरता बनाए रखना इसका दायित्व होता है। भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में आधुनिक बैंकों ने कई महत्वपूर्ण कार्य कर योगदान दिया है।

भारतीय स्टेट बैंक की स्थापना 2 जून 1806 को कलकत्ता में बैंक ऑफ कलकत्ता के रूप में हुई थी। वर्ष 1809 में बैंक ऑफ कलकत्ता का नया नामकरण बैंक ऑफ बंगाल के रूप में हुआ। देश के सामाजिक व आर्थिक वातावरण को देखते हुए 1840 में बैंक ऑफ बाम्बे और 1848 में बैंक ऑफ मद्रास की स्थापना हुई। इन तीनों बैंकों को प्रेसीडेन्सी के नाम से जाना जाता था और इन्हीं तीनों बैंकों को मिलाकर 1921 में इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया की स्थापना हुई। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वर्ष 1 जुलाई, 1955 में इम्पीरियल बैंक को भारतीय स्टेट बैंक का नाम दे दिया गया। 16 अप्रेल 1955 को स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया की स्थापना से संबंधित विधेयक संसद में रखा गया जिसके पारित हो जाने पर इसकी स्थापना हुई।

आई0सी0आई0सी0आई0 बैंक भारत की प्रमुख बैंकिंग एवं वित्तीय सेवा संस्थान है। पहले इसका नाम 'इंडस्ट्रियल क्रेडिट ऐण्ड इन्वेस्टमेन्ट कार्पोरेशन आफ इण्डिया' था। यह भारत का तीसरा सबसे बड़ा बैंक है। बाजार कैपिटलाइजेशन की दृष्टि से भारत के निजी क्षेत्र का यह सबसे बड़ा बैंक है। आई0 सी0 आई0 सी0 आई0 बैंक की मूल स्थापना 1994 में आई0 सी0 आई0 सी0 आई0 लिमिटेड, जो कि एक भारतीय वित्तीय संस्थान द्वारा अपनी सहयोगी संस्था के रूप में की गयी थी। इसका प्रमुख उद्देश्य भारतीय व्यवसायों को मध्यम अवधि तथा लंबी अवधि का परियोजना वित्त मुहैया करने के लिए एक विकास वित्तीय संस्था का निर्माण करना वर्ष 1990 के दशक में आई0सी0आई0सी0आई0 बैंक ने अपना व्यवसाय केवल परियोजना वित्त देने वाली एक विकास वित्तीय संस्थान से स्वयं सीधे तथा आई0सी0आई0सी0आई0 जैसी अनेक सहयोगी संस्थाओं तथा संबंद्ध संस्थाओं के माध्यम से अनेक प्रकार के उत्पाद व सेवाएं मुहैया करने वाले वित्तीय सेवा समूह में बदल दिया। वर्ष 1999 में आई0सी0आई0सी0आई0 एन0वाय0एस0ई0 में सूची बद्ध होने वाली पहली भारतीय कंपनी तथा गैर–जापान एशिया से पहला बैंक या वित्तीय संस्थान बना।

समस्या कथन
भारत में संचालित आई0सी0आई0सी0आई0 और एस0बी0आई0 बैंकों की लाभप्रदत्ता का विश्लेषण।

शोध के उद्देश्य
- भारत में संचालित आई.सी.आई.सी.आई. और एस.बी.आई. बैंकों

की लाभप्रदत्ता का विश्लेषण करना।
- आई.सी.आई.सी.आई. एवं एस.बी.आई. बैंक वास्तविकता में क्या जनता को लाभान्वित कर पा रहे हैं?
- चयनित बैंकों में लाभप्रदत्ता संबंधी विभिन्न समस्याओं के सुधार हेतु उपयोगी एवं प्रभावी सुझाव प्रस्तुत करना।

निदर्शन का चयन

निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकों में से दैव निदर्शन विधि के आधार पर बैंकों का चयन किया है। निदर्षन विधि द्वारा चयनित बैकें निम्न प्रकार हैं– आई.सी.आई.सी.आई. और एस.बी.आई.।

विधि

प्रस्तुत शोध 'सर्वेक्षण विधि' पर आधारित है।

उपकरण प्रविधियाँ

साक्षात्कार, अनुसूची, अवलोकन, प्रश्नावली ,सांख्यिकी विधियॉ।

विश्लेषण

तालिका 1: निजी एवं सार्वजनिक बैंकों की शुद्ध लाभ पूंजी

बैंकों के नाम	2010–11	2011–12	2012–13	2013–14	2014–15
निजी क्षेत्र की बैंक (आई.सी.आई.सी.आई) भारतीय औद्योगिक साख एवं विनियोग निगम बैंक	40.6	53.5	75.2	27.3	125.6
सार्वजनिक क्षेत्र की बैंक (एस.बी.आई.)स्टेट बैंक ऑफ इंडिया	75.1	52.2	47.5	51.6	92.7

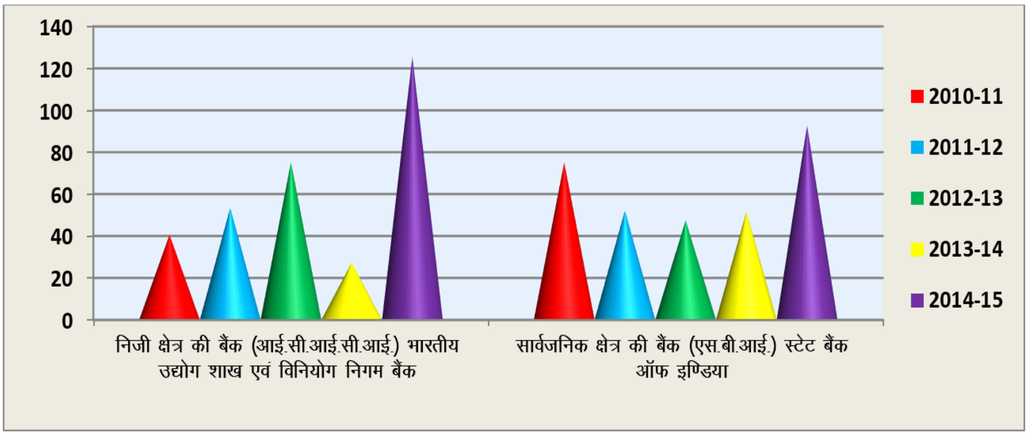

स्त्रोत 1: निजी एवं सार्वजनिक बैंकों के वार्षिक प्रतिवेदनों से परिगणित)

तालिका के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि निजी क्षेत्र की बैंक आई.सी.आई.सी.आई. बैंक में शुद्ध लाभ वर्ष 2010–11 में 40.6 प्रतिशत था जो बढ़कर वर्ष 2011–12 में 53.5 प्रतिशत हो गया, इसी प्रकार वर्ष 2012–13 में 75.2 प्रतिशत रहा जो घटकर वर्ष 2013–14 में 27.3 प्रतिशत रह गया। इसी प्रकार वर्ष 2014–15 में 125.6 प्रतिशत तक हो गया।

सार्वजनिक क्षेत्र की बैंक स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया में शुद्ध लाभ वर्ष 2010–11 में 75.1 प्रतिशत था जो घटकर वर्ष 2011–12 में 52.2 प्रतिशत हो गया, इसी प्रकार वर्ष 2012–13 में 47.5 प्रतिशत रहा जो बढ़कर वर्ष 2013–14 में 51.6 प्रतिशत हो गया। इसी प्रकार वर्ष 2014–15 में 92.7 प्रतिशत तक हो गया।

तालिका 2: निजी एवं सार्वजनिक बैंकों के शुद्ध लाभ का शुद्ध मूल्य पर अनुपात का विवरण

बैंकों के नाम	2010–11	2011–12	2012–13	2013–14	2014–15
निजी क्षेत्र की बैंक (आई.सी.आई.सी.आई) भारतीय औद्योगिक साख एवं विनियोग निगम बैंक	30.5	22.4	25.6	20.8	26.5
सार्वजनिक क्षेत्र की बैंक (एस.बी.आई.) बैंक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया	22.8	20.6	23.7	11.2	24.2

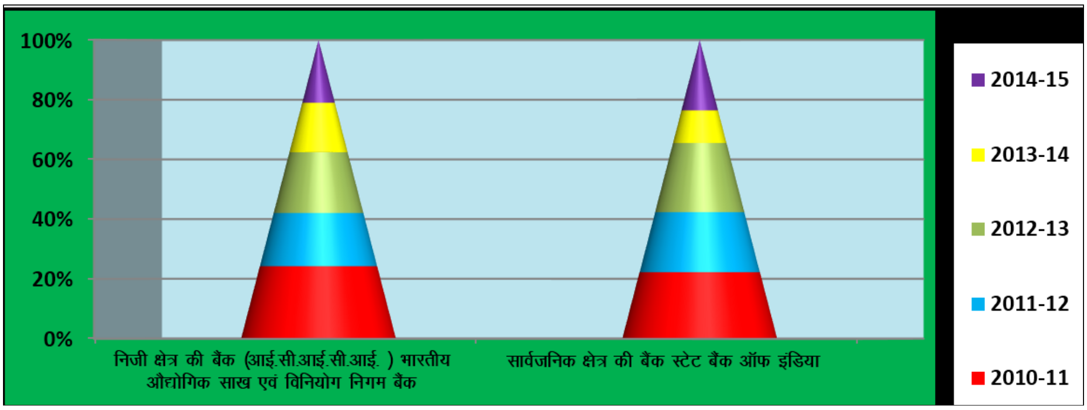

स्त्रोत 2: निजी एवं सार्वजनिक बैंकों के वार्षिक प्रतिवेदनों से परिगणित)

तालिका के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि निजी क्षेत्र की बैंक आई. सी.आई.सी.आई. बैंक में शुद्ध लाभ वर्ष 2010—11 में 30.5 प्रतिशत था जो घटकर वर्ष 2011—12 में 22.4 प्रतिशत हो गया, इसी प्रकार वर्ष 2012—13 में 25.6 प्रतिशत रहा जो घटकर वर्ष 2013—14 में 20.8 प्रतिशत हो गया। इसी प्रकार वर्ष 2014—15 में 26.5 प्रतिशत तक हो गया।

सार्वजनिक क्षेत्र की बैंक स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया में शुद्ध लाभ वर्ष 2010—11 में 22.8 प्रतिशत था जो घटकर वर्ष 2011—12 में 20.6 प्रतिशत हो गया, इसी प्रकार वर्ष 2012—13 में 23.7 प्रतिशत रहा जो घटकर वर्ष 2013—14 में 11.2 प्रतिशत हो गया। इसी प्रकार वर्ष 2014—15 में 24.2 प्रतिशत तक हो गया।

तालिका 3: निजी एवं सार्वजनिक बैंकों के शुद्ध लाभ का सकल संचालन आय से अनुपात

बैंकों का नाम	2010—11	2011—12	2012—13	2013—14	2014—15
निजी क्षेत्र की बैंकः (आई.सी.आई.सी.आई) भारतीय औद्योगिक साख एवं विनियोग निगम बैंक	58.0	32.4	35.6	20.8	26.5
सार्वजनिक क्षेत्र की बैंक (एस.बी.आई) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया	32.8	20.6	23.7	15.2	24.2

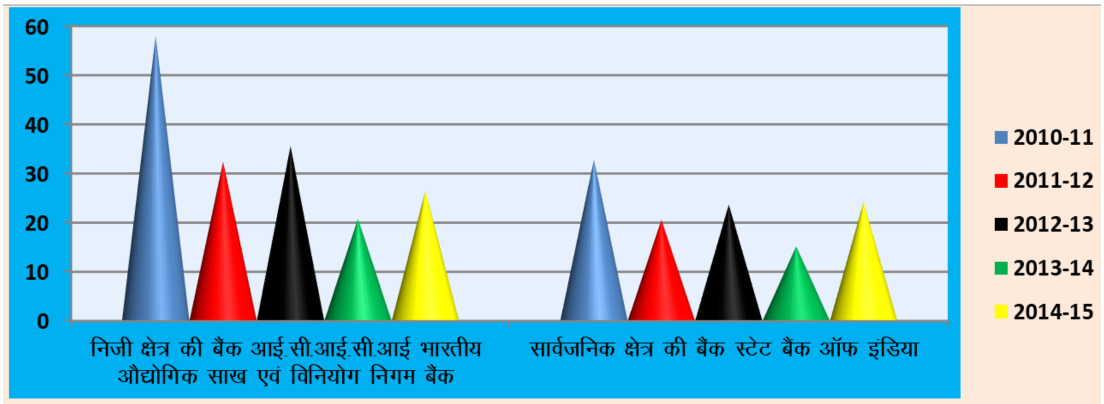

स्त्रोत 3: निजी एवं सार्वजनिक बैंकों के वार्षिक प्रतिवेदनों से परिगणित)

तालिका के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि निजी क्षेत्र की बैंक आई. सी.आई.सी.आई. बैंक में शुद्ध लाभ वर्ष 2010—11 में 58.0 प्रतिशत था जो घटकर वर्ष 2011—12 में 32.4 प्रतिशत हो गया, इसी प्रकार वर्ष 2012—13 में 35.6 प्रतिशत रहा जो घटकर वर्ष 2013—14 में 20.8 प्रतिशत हो गया। इसी प्रकार वर्ष 2014—15 में 26.5 प्रतिशत तक हो गया।

सार्वजनिक क्षेत्र की बैंक स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया में शुद्ध लाभ वर्ष 2010—11 में 32.8 प्रतिशत था जो घटकर वर्ष 2011—12 में 20.6 प्रतिशत हो गया, इसी प्रकार वर्ष 2012—13 में 23.7 प्रतिशत रहा जो घटकर वर्ष 2013—14 में 15.2 प्रतिशत हो गया। इसी प्रकार वर्ष 2014—15 में 24.2 प्रतिशत तक हो गया।

तालिका 4: निजी एवं सार्वजनिक बैंकों के पूंजी कोषों पर प्रत्याय की दर

बैंकों के नाम	2010—11	2011—12	2012—13	2013—14	2014—15
निजी क्षेत्र की बैंक (आई.सी.आई.सी.आई) भारतीय औद्योगिक साख एवं विनियोग निगम बैंक	46.0	42.4	35.6	30.8	36.5
सार्वजनिक क्षेत्र की बैंक (एस.बी.आई.) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया	42.8	30.6	23.7	35.2	34.2

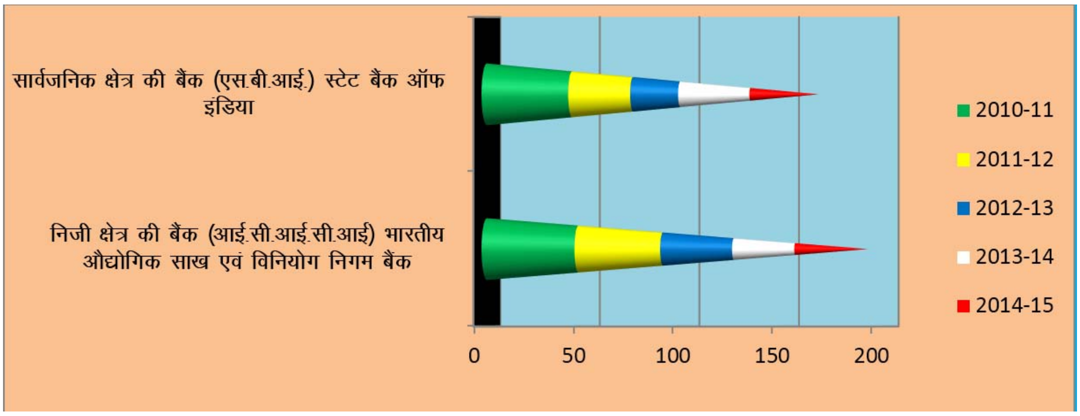

स्त्रोत 4: निजी एवं सार्वजनिक बैंकों के वार्षिक प्रतिवेदनों से परिगणित)

तालिका के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि निजी क्षेत्र की बैंक आई. सी.आई.सी.आई. बैंक में शुद्ध लाभ वर्ष 2010–11 में 46.0 प्रतिशत था जो घटकर वर्ष 2011–12 में 42.4 प्रतिशत हो गया, इसी प्रकार वर्ष 2012–13 में 35.6 प्रतिशत रहा जो घटकर वर्ष 2013–14 में 30.8 प्रतिशत हो गया। इसी प्रकार वर्ष 2014–15 में 36.5 प्रतिशत तक हो गया।

सार्वजनिक क्षेत्र की बैंक स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया में शुद्ध लाभ वर्ष 2010–11 में 42.8 प्रतिशत था जो घटकर वर्ष 2011–12 में 30.6 प्रतिशत हो गया, इसी प्रकार वर्ष 2012–13 में 23.7 प्रतिशत रहा जो बढ़कर वर्ष 2013–14 में 35.2 प्रतिशत हो गया। इसी प्रकार वर्ष 2014–15 में 34.2 प्रतिशत तक रह गया।

तालिका 5: निजी एवं सार्वजनिक बैंकों मे सकल लाभ अनुपात

बैंकों के नाम	2010–11	2011–12	2012–13	2013–14	2014–15
निजी क्षेत्र की बैंक (आई.सी.आई.सी.आई) भारतीय औद्योगिक साख एवं विनियोग निगम बैंक	46.1	62.5	65.6	68.8	72.5
सार्वजनिक क्षेत्र की बैंक (एस.बी.आई.) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया	42.8	61.6	63.7	65.2	54.2

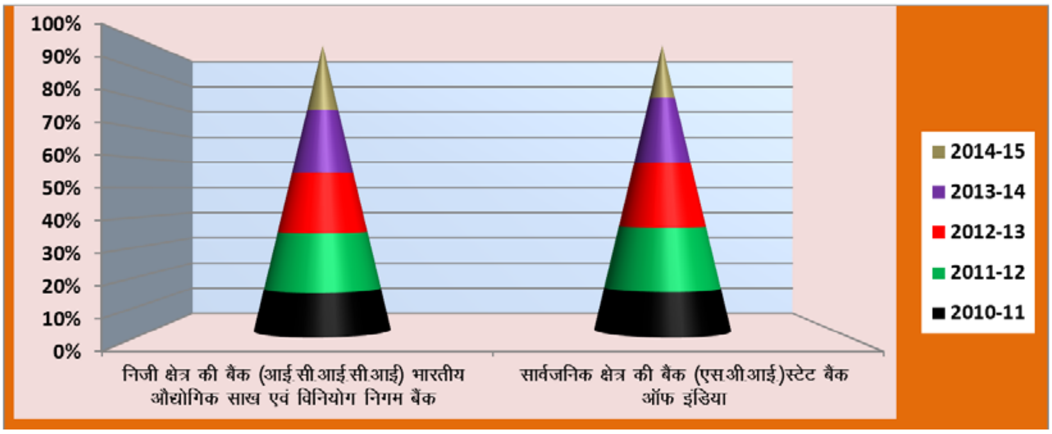

स्त्रोत 5: निजी एवं सार्वजनिक बैंकों के वार्षिक प्रतिवेदनों से परिगणित)

तालिका के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि निजी क्षेत्र की बैंक आई. सी.आई.सी.आई. बैंक में शुद्ध लाभ वर्ष 2010–11 में 46.1 प्रतिशत था जो बढ़कर वर्ष 2011–12 में 62.5 प्रतिशत हो गया, इसी प्रकार वर्ष 2012–13 में 65.6 प्रतिशत रहा जो बढ़कर वर्ष 2013–14 में 68.8 प्रतिशत हो गया। इसी प्रकार वर्ष 2014–15 में 72.8 प्रतिशत तक हो गया।

सार्वजनिक क्षेत्र की बैंक स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया में शुद्ध लाभ वर्ष 2010–11 में 42.8 प्रतिशत था जो बढ़कर वर्ष 2011–12 में 61.6 प्रतिशत हो गया, इसी प्रकार वर्ष 2012–13 में 63.7 प्रतिशत रहा जो बढ़कर वर्ष 2013–14 में 65.2 प्रतिशत हो गया। इसी प्रकार वर्ष 2014–15 में 54.2 प्रतिशत तक रह गया।

तालिका 6: बैंकों में कुल आय की प्रवृत्ति राशि

बैंकों के नाम	2010–11		2011–12		2012–13		2013–14		2014–15	
	कुल आय	प्रवृत्ति राशि	कुल आय	प्रवृत्ति राशि	कुल आय	प्रवृत्ति राशि	कुल आय	प्रवृत्ति राशि	कुल आय	प्रवृत्ति राशि
आई.सी.आई.सी.आई बैंक	1566	515	3838	2376	23638	1022	22060	6589	23937	978
स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया	2678	626	4949	3487	34785	2134	33279	7590	35059	989

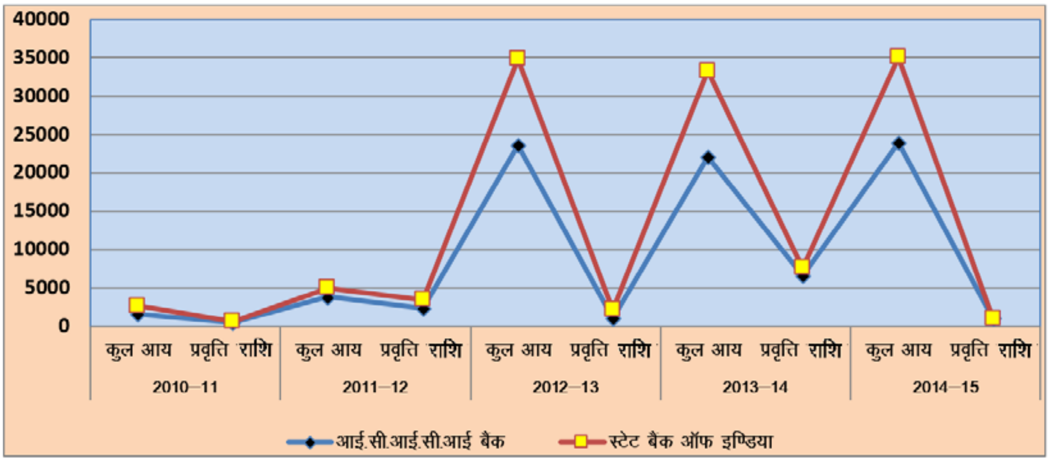

स्त्रोत 6: निजी एवं सार्वजनिक बैंकों के वार्षिक प्रतिवेदनों से परिगणित)

तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि निजी क्षेत्र की बैंक (आई.सी.आई.सी.आई बैंक) में वर्ष 2010–11 में कुल आय 1566 तथा प्रवत्ति राशि 515 है, इसी प्रकार वर्ष 2011–12 में कुल आय 3838 है, तथा प्रवृत्ति राशि 2376 है, वर्ष 2012–13 में कुल आय 23638 है, तथा प्रवृत्ति राशि 1022 है, वर्ष 2013–14 में कुल आय 22060 है तथा प्रवृत्ति राशि 6589 है, तथा वर्ष 2014–15 कुल आय 23937 है तथा प्रवृत्ति राशि 978 रही।

सार्वजनिक क्षेत्र की बैंक (स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया) में वर्ष 2010–11 में कुल आय 2678 तथा प्रवत्ति राशि 626 है, इसी प्रकार वर्ष 2011–12 में कुल आय 4949 है, तथा प्रवृत्ति राशि 3487 है, वर्ष 2012–13 में कुल आय 34785 है, तथा प्रवृत्ति राशि 2134 है, वर्ष 2013–14 में कुल आय 33279 है तथा प्रवृत्ति राशि 7590 है, तथा वर्ष 2014–15 कुल आय 35059 है तथा प्रवृत्ति **राशि** 989 रही।

तलिका 7: बैंकों में कुल व्यय की प्रवृत्ति राशि

बैंकों के नाम	2010–11		2011–12		2012–13		2013–14		2014–15	
	कुल व्यय	प्रवृत्ति राशि	कुल व्यय	प्रवृत्ति राशि	कुल व्यय	प्रवृत्ति राशि	कुल व्यय	प्रवृत्ति राशि	कुल व्यय	प्रवृत्ति राशि
आई.सी.आई.सी.आई बैंक	1235	550	1739	504	2029	290	2519	490	3079	560
स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया	4688	653	5095	407	5321	226	5410	289	5768	358

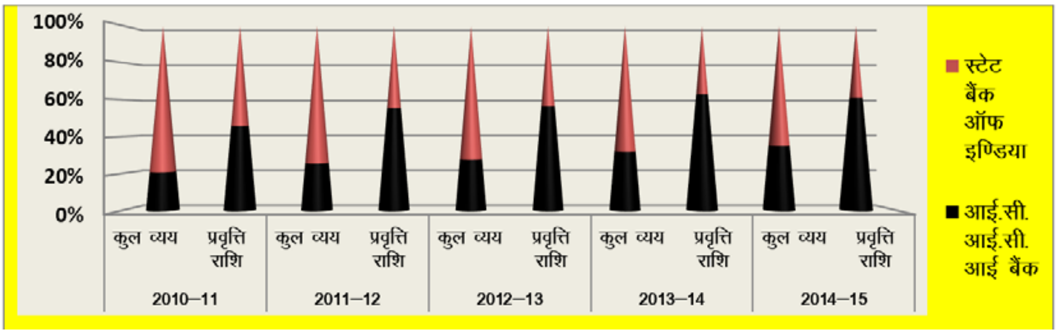

स्त्रोत 7: निजी एवं सार्वजनिक बैंकों के वार्षिक प्रतिवेदनों से परिगणित)

तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि निजी क्षेत्र की बैंक (आई.सी.आई.सी.आई बैंक) में वर्ष 2010–11 कुल व्यय 1235 तथा प्रवत्ति राशि 550 है, इसी प्रकार वर्ष 2011–12 में कुल व्यय 1739 है, तथा प्रवृत्ति राशि 504 है, वर्ष 2012–13 में कुल व्यय 2029 है, तथा प्रवृत्ति राशि 290 है, वर्ष 2013–14 में कुल व्यय 25190 है तथा प्रवृत्ति राशि 490 है, तथा वर्ष 2014–15 कुल व्यय 3079 है तथा प्रवृत्ति राशि 560 रही।

सार्वजनिक क्षेत्र की बैंक (स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया) में वर्ष 2010–11 कुल व्यय 4668 तथा प्रवत्ति राशि 653 है, इसी प्रकार वर्ष 2011–12 में कुल व्यय 5095 है, तथा प्रवृत्ति राशि 409 है, वर्ष 2012–13 में कुल व्यय 5321 है, तथा प्रवृत्ति राशि 226 है, वर्ष 2013–14 में कुल आय 5410 है तथा प्रवृत्ति राशि 289 है, तथा वर्ष 2014–15 कुल आय 5768 है तथा प्रवृत्ति राशि 358 रही।

सुझाव

बैंकों की समस्याओं के समाधान हेतु कुछ प्रमुख सुझाव दिये गये हैं, जिन्हें निम्न प्रकार से बतलाया जा सकता है :–

- निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकों को अपने वित्त की कमी को दूर करने हेतु अपनी पूंजी में वृद्धि करनी चाहिये। पूंजी में वृद्धि बैंकों द्वारा बाह्य स्त्रोतों के माध्यम से की जा सकती है।
- निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकों में जमाकर्ताओं का विश्वास अर्जित करने के लिये समय–समय पर ग्राहकों के लिये सेमीनार एवं विचारगोष्ठियों का आयोजन करना चाहिये और इस प्रकार के आयोजनों में बैंकों द्वारा अपने ग्राहकों को उनकी जमा पूंजी की सुरक्षा का पर्याप्त भरोसा दिलाया जाना चाहिये।
- निजी एवं सार्वजनिक बैंकों द्वारा ऋण वितरण के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि ऋण जरूरतमंद व्यक्तियों को ही दिया जा रहा है या नहीं। जब ऋण जरूरतमंद व्यक्तियों को ही प्रदान किया जायेगा तो शोधार्थी का ऐसा मानना है कि इन व्यक्तियों के द्वारा समय रहते बैंकों का ऋण आसानी से चुकता कर दिया जायेगा जिससे निजी एवं सार्वजनिक बैंकों को ऋण वसूली के लिये अनावश्यक समय व्यतीत नहीं करना पड़ेगा।
- निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकों को अपनी शाखाओं में वृद्धि शहरी क्षेत्र के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी करना चाहिए। शाखाओं में वृद्धि होने से निष्चित रूप से निजी क्षेत्र की बैंकों के व्यवसाय में आशातीत वृद्धि होगी।
- निजी एवं सार्वजनिक बैंकों को ऋण देने की प्रक्रिया को और अधिक सरल बनाया जाना चाहिये। साथ ही इन बैंकों के द्वारा ऋण देते समय अपने ग्राहकों से कम औपचारिकतायें पूर्ण करानी चाहिये। जिससे इन बैंकों से लाभ लेने के लिये अधिक से अधिक ग्राहक आकर्षित होंगे, जिसका प्रभाव बैंकिंग व्यवसाय में वृद्धि की ओर धनात्मक होगा।
- निजी एवं सार्वजनिक बैंकों में अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा ग्राहकों के मध्य सद्भावनापूर्ण व्यवहार के लिये समय–समय पर ग्राहक संबंध के कार्यक्रम आयोजित करते रहना चाहिये और इसके लिये इन बैंकों में ग्राहक संबंध अधिकारी की भी नियुक्ति की जानी चाहिये।
- निजी एवं सार्वजनिक बैंकों में कर्मचारियों की कार्यकुषलता की कमी को दूर करने के लिये बैंकों द्वारा समय–समय पर अपने कर्मचारियों के लिये आधुनिक प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिये। इस प्रकार के प्रशिक्षण की व्यवस्था संपर्क कक्षाओं एवं ओरियेन्टेशन कक्षाओं के माध्यम से की जा सकती है।
- निजी एवं सार्वजनिक बैंकों को अपने बैंकिंग व्यवसाय को देखते हुए कुशल कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि करनी चाहिये। यह अच्छा होगा कि इन बैंकों के कर्मचारियों के चयन के समय प्रबंध में स्नातक या स्नातकोत्तर उपाधि धारकों को वरीयता प्रदान की जाये।

- निजी क्षेत्र की बैंकों को वित्त की कमी को दूरी करने हेतु अपनी पूंजी में वृद्धि करनी चाहिये। पूँजी में वृद्धि बाह्य स्त्रोतों के माध्यम से की जा सकती है। जिससे निजी क्षेत्र की बैंकों को अधिक से अधिक लाभ मिल सके।

निष्कर्ष

आई.सी.आई.सी.आई बैंक ने इन वर्षो में निजी क्षेत्र की अन्य बैंकों की अपेक्षा कोष साधन का निर्माण व कोष का अधिक प्रयोग करते हुए बैंक व्यवसाय भी अधिक किया है। इसने बैंक ब्याज आय, गैर ब्याज आय, कुल आय एवं शुद्ध ब्याज आय एस.बी.आई. बैंक से अधिक अर्जित किया है। इस बैंक का शुद्ध लाभ प्रारंभिक छः वर्ष तक एस.बी.आई. बैंक की अपेक्षा कम था किन्तु अंतिम चार वर्ष में इस निजी बैंक ने अपनी आय अर्जन की क्षमता में वृद्धि करते हुए बेहतर लाभ अर्जित किया है। अधिकतम बैंक व्यवसाय करने के बावजूद आई.सी.आई.सी.आई बैंक पर भार भी अपेक्षाकृत कम रहा है और अंतिम एक वर्ष में इस बैंक पर बिल्कुल भी भार नहीं रहा है। आई.सी.आई.सी.आई बैंक लिमिटेड कम दर पर ब्याज आय एवं शुद्ध लाभ अर्जित करते हुए एस.बी.आई बैंक से बेहतर बैंक व्यवसाय कर आर्थिक व संचालन कार्यकुशलता का परिचय दिया है। बैंक व्यवसाय ग्राहकों के अनुकूल है, आई.सी.आई.सी.आई बैंक का प्रदर्शन नव स्थापित निजी क्षेत्र की सभी बैंकों से बेहतर रहा है। यह बैंकिंग भविष्य, संभावनाओं एवं चुनौतियों की दृष्टि से उत्तम है। एस.बी.आई. बैंक की शाखाओं व कर्मचारी तथा बैंक व्यवसाय की दृष्टि से आई.सी.आई.सी.आई बैंक की स्थिति इसकी तुलना में बेहतर है क्योंकि इस बैंक की शाखाएं एवं कर्मचारी संख्या भी एस. बी.आई. बैंक से अधिक है साथ ही बैंक का प्रति शाखा बैंक व्यवसाय एवं प्रति कर्मचारी बैंक व्यवसाय भी बेहतर है। आई.सी. आई.सी.आई. बैंक की लाभ अर्जन क्षमता बहुत अच्छी होने के कारण यह बैंक एस.बी.आई. बैंक से अधिक शुद्ध लाभ अर्जित कर रही है। यह सब बैंक की बेहतर उत्पादक, अनुत्पादक नीति, उचित वातावरण, कुशल कर्मचारियों एवं बेहतर प्रबंधन तथा बेहतर ग्राहक संबंध का परिणाम है जो बैंकिंग भविष्य, चुनौतियों एवं सम्भावनाओं के अनुकूल है।

बैंक व्यवसाय के विभिन्न बिंदुओं का प्रमाप अनुपातों द्वारा विश्लेषण करने से यह ज्ञात हुआ है कि आई.सी.आई.सी.आई बैंक ने इन वर्षों में एस.बी.आई. बैंक से बेहतर प्रदर्षन किया है क्योंकि इस बैंक ने इन वर्षों में अधिक बैंक व्यवसाय तथा अधिक कोश निर्माण कर कोश का उचित प्रयोग, अधिकतम कार्यशील कोष, कार्यशील कोषों पर उचित ब्याज आय एवं गैर ब्याज आय अर्जित करते हुए गैर ब्याज व्ययों एवं स्थाई संपत्तियों को संतुलन में रखा है। इस बैंक का दक्षता भार अनुपात भी एस.बी.आई. बैंक से भी बेहतर है। आई. सी.आई.सी.आई बैंक लिमिटेड का शुद्ध ब्याज आय का बैंक व्यवसाय से अनुपात एस.बी.आई बैंक समूह औसत से 0.63 प्रतिशत कम रहा है, और लाभदायकता अनुपात दस वर्षीय समूह औसत आई.सी.आई. सी.आई बैंक से 0.20 प्रतिशत कम है किंतु यह बैंक व्यवसाय, कोष साधन एवं कोष प्रयोग में तथा बैंक की उत्पादक (चालू) संपत्तियों में वृद्धि की तुलना में बहुत कम है, इसलिये आई.सी.आई.सी.आई बैंक की लाभदायकता अनुपात दस वर्षीय औसत में 0.20 प्रतिशत एस.बी.आई. बैंक से कम होना पिछड़ना नहीं है। उत्तम बैंक व्यवसाय एवं पर्याप्त मात्रा में लाभ अर्जन करना बेहतर ग्राहक संबंध का परिचायक है क्योंकि बिना ग्राहक के व्यवसाय सम्भव नहीं होता है। ग्राहक जिस बैंक की उत्पादक एवं अनुत्पादक नीतियों, शाखा परिसर आकर्षक, कर्मचारियों का कार्य व्यवहार बेहतर हो तो ग्राहक उस बैंक की ओर खिंचा चला जाता है। वर्तमान ग्राहक सम्मान और अधिकतम तकनीकी सुविधाओं को अधिक पसंद करते हैं। ये सभी बातें आई.सी.आई.सी.आई बैंक एवं एस.बी.आई. बैंक के साथ–साथ अन्य बैंकों में भी मौजूद है। जो बैंकिंग व्यवसाय, विकास, सम्भावनाओं एवं चुनौतियों के अनुकूल है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गर्ग निधि, मध्य प्रदेश के जिला सहकारी केन्द्रीय बैंकों का वित्तीय प्रबंधन एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध–प्रबंध, वर्ष 2000, पृष्ठ 208.
2. शर्मा नरेश कुमार, प्रोफेटेबिलिटी असेसमेन्ट ऑफ स्टेटूटरी कॉरपोरेशन, बोर्ड ऑफ राजस्थान, अप्रकाशित शोध–प्रबंध, वर्ष 1991, पृष्ठ 8.
3. सिंहल, आर.के.,ग्रेसिम इण्डस्ट्रीज में आय का प्रबंध, अप्रकाशित शोध–प्रबंध जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, वर्ष 1989, पृष्ठ 61.
4. मेहरोत्रा एच.सी.,सार्वजनिक कंपनियों में आय का प्रबंध'', अप्रकाशित शोध प्रबंध, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा, पृष्ठ 105.
5. मंगल, विजय कुमार, ''मुरैना (श्योपुर सहित) जिले के औद्योगिक विकास में राष्ट्रीयकृत बैंकों का योगदान'' अप्रकाशित शोध–प्रबंध, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर
6. श्रीमती अंजली ज्ञानानी, ''इलाहाबाद बैंक झाँसी में उपभोक्ता सेवा का विश्लेषणात्मक अध्ययन (1985 से 1995 तक)'' अप्रकाशित शोध–प्रबंध, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर
7. सक्सैना, सुरेन्द्र कुमार, ''कम्प्यूटराइजेशन इन बैंकिंग आपरेशन ए केस ऑफ ग्वालियर जॉन ऑफ स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया'' अप्रकाशित शोध–प्रबंध, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर
8. शर्मा, जी0 एन0, डॉ0 मालीराम, ''बैंकिग विधि और व्यवहार'', रमेश बुक डिपो, जयपुर, 2007
9. इजरा, सालोमन, ''द थ्योरी ऑफ फायनेन्सियल मैनेजमेन्ट,'' कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क, 2006
10. बोक्यले, जेम्स0 ई0, ''बैंकिंग मैनेजमेन्ट – ए गाइड टू मोर प्रेक्टिकल बैंकिंग'', गुल पब्लिकेशन, लंदन
11. बॉस, ए0 के0, ''फण्डामेन्टल ऑफ बैंकिंग थ्योरी एण्ड प्रेक्टिस'', मार्डन बुक एजेन्सी, कलकत्ता, 2002
12. कोठारी, सी0 आर0, ''रिसर्च मैथ्डोलॉजी'', विश्वा प्रकाशन,1985.
13. वार्षिक प्रतिवेदन, भारतीय स्टेट बैंक, आई0सी0आई0सी0आई0 बैंक
14. www.canarabank.com
15. www.statebankofindia.in